सामाजिक संस्था सम्पूर्णा

समग्र विकास की ओर अग्रसर

गैर सरकारी संगठन

आलेख

विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरण दिवस 15 जून को समर्पित – खाली चाय की प्याली

–डॉ. शोभा विजेन्द्र
संस्थापिका, सम्पूर्णा

कल ही की बात है कि मैं मीरा के घर गई। उसका घर हमेशा से ही साफ–सुथरा, सजा हुआ और करीने से लगा हुआ होता है। मीरा वर्षों से अपने सास–ससुर के साथ रहती है। अच्छा लगता है। लगता है कि सासु जी 80 वष और ससुर जी भी 85 वष के हो चुके होंगे। वह स्वयं भी तो 52–53 वर्ष की हो गई है। वैसे तो किसी न किसी बात पर वह हमेशा से ही कहती थी कि घर में एक बेटा और भी तो है। परंतु मेरे सास–ससुर एक महीने के लिए भी वहां नहीं जाते। एक दिन मैंने हंसते हुए पूछ भी डाला था कि शादी होकर, तुम इसी बरेली के घर में तो आई थीं। अब यह घर सास–ससुर का ही तो है। अगर दूसरा बेटा दूसरे शहर में रहने लगा है, तो मां–बाप भी अपना घर छोड़ दें यह कहां तक तर्क संगत है? और जहां तक एक महीने परिवर्तन की बात है, जिसे आजकल चेंज भी कहते हं, तो उस चेंज के लिए मीरा तुम भी तो दूसरे शहर जा सकती हो। उस दिन सहेली के द्वारा यह कहा जाना मीरा को अच्छा नहीं लगा।

परंतु आज तो हद ही हो गई, जब मैं मीरा के घर गई तो मीरा ने मुझे अपने सुसज्जित ड्राइंग रूम में बैठाया। ड्राइंग रूम की एक–एक वस्तु धूल रहित, चमकदार और परंपरागत कालीन के साथ शोभायमान हो रही थी। मैं सभी चीजों को बड़े प्यार से निहार रही थी और धीरे–धीरे माता जी की बनाई हुई, चाय का रस ले रही थी। मेरा सारा ध्यान मीरा की मीठी–मीठी बातों पर था। तभी मीरा के पति राकेश की कर्कश आवाज मुझे सुनाई दी। वह जोर–जोर से चिल्लाकर अपने पिता से आज के समाचार पत्र के विषय में पूछ रहा था। उसकी वाणी में कहीं पर भी सहजता, सरलता और सम्मान का भाव नहीं था। वह कह रहा था कि आपको रोज सुबह अखबार पढ़ना जरूरी है क्या? और रोज आप अखबार कहीं रख कर भूल जाते हो। जैसे ही मैंने अपनी नजर बैड रूम के बाहर खड़े हुए राकश के पिताजी

पर घुमाई, मेरे दुःख का अंत ही न रहा। व बुजुर्ग एक चोर की भांति चारों ओर अखबार ढ़ढ़ने में व्यस्त थे।

य ह, हमारे मध्यम वर्गीय परिवारों में अपने बुजुर्गों का सम्मान! और कभी सोचा ये बुजुर्ग कौन हैं? ये हमारे माता–पिता ही तो हैं। इनका सम्मान करना अथवा प्यार से बोलना, क्या यह बहुत बड़ी बात है? जिन माता–पिता ने दिन–रात मेहनत करके हमें पालापोसा और बड़ा किया, उनके प्रति यह व्यवहार कदापि उचित नहीं है।

आज के ही समाचार पत्र में एक सवं सामने आया है कि 59 प्रतिशत हमारे वरिष्ठ नागरिक दुर्व्यवहार के शिकार होते हैं। और यह दुर्व्यवहार 36 प्रतिशत उनके नाते–रिश्तेदारों द्वारा, 35 प्रतिशत स्वयं के बेटे द्वारा और 21 प्रतिशत बहुओं द्वारा किया जाता है। आप ही बताइए, भारत जैसे दश में जहां मां के आचंल में स्वर्ग और पिता के साथ में सुरक्षा कही जाती है, वहां पर 59 प्रतिशत बुजुर्गों पर दुर्व्यवहार होना, गंभीर विषय है या नहीं? आज पूरा विश्व दुर्व्यवहार जागरण दिवस मना रहा है। इससे अधिक दुर्भाग्यपूण कुछ नहीं है।

मंदिर और मस्जिदों में जाकर इश्वर की अराधना करने वाले सपूतों से मेरा अनुरोध है कि घर में रहने वाले अपने बुजुर्गों को प्रेम से बोलकर प्रतिदिन वंदन करें। शायद यही सच्ची पूजा है। यह सर्वे 4400 बुजुर्गों पर 22 शहरों में किया गया है। यह लिखते हुए मेरा सिर शर्म से झुक रहा है कि इसमें से 13 प्रतिशत बुजुर्गों ने यह भी स्वीकार किया कि लापरवाही, बद्तमीजी, आर्थिक शाषण के साथ–साथ उनके साथ मारपीट भी की जाती है। इसमें आधे से अधिक को तो यह नहीं मालूम है कि इस बारे में कोई सरकारी या गैर सरकारी निवारण तंत्र (रिडरेसल मेकेनिजम) है, का भी पता नहीं है। इसमें से आपको यह जानकर दुःख भी होगा कि लगभग 46 प्रतिशत हमारे बुजुर्गों के पास अपने जीवन यापन चलाने के लिए कोई आय का साधन नहीं है।

उच्च पद से सेवा निवृत्त मीरा के ससुर बहुत ही असहाय नजर आ रहे थे। जब मेरी दृष्टि मीरा पर पड़ी ता वह भी बगले झांकने लगी। ऐसे में मीरा की सासु मां जो कि 80 वर्षीय बुजुर्ग हं, की भी अदरक पड़ी उस चाय का मैं धन्यवाद भी न दे पायी। स्थिति इतनी विकट हो चुकी थी कि एक क्षण के लिए भी मुझे वहां रूकना मंजूर नहीं था। लेकिन ऐसा लगा कि अगर मैं आज भी न बोली तो मेरे बोलने पर भी धिक्कार है। मैंने तुरंत मीरा से कहा कि मीरा तुम्हें अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। अपने कर्कश पति को अपने माता–पिता की जिम्मेदारी का अहसास कराना होगा। यह कहकर कि वह मेरी नहीं सुनता है, तुम अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकती। पुरानी पंरपराएं तोड़कर प्रेम विवाह किया तो कही–सुनी बातों को छोड़, अपने सास–ससुर को भी अपना माता–पिता समझना होगा। अब वही सुसज्जित ड्रांइग रूम मुझे भद्दा, गंदा और अशांत लग रहा था। मैं उस खाली चाय की प्याली को देखती हुई वहां से निकल पड़ी।